(b) There is an All India Handloom Fabric Marketing Cooperative Society ltd. having its area of operation throughout the country. It is upto the Apex Handloom Weaver's Cooperative Societies, if they so choose, to constitute another federation.

हैंक यार्न ऑब्लिगेशन स्कीम

3576. डा० जिनेन्द्र कुमार जैन :
श्री राम जेठमलानी :

क्या वस्त्र मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि राष्ट्रीय वस्त्र निगम के अन्तर्गत 121 कताई मिलों द्वारा "हैंक यार्न ऑब्लिगेशन स्कीम" के अन्तर्गत सूत की किस्मों का उत्पादन नहीं किया जाता है ;

(ख) यदि हां, तो इन मिलों द्वारा वर्ष 1990–91 तथा 1991–92 में वर्षवार कितनी-कितनी मात्रा में किस-किस सूत का उत्पादन किया गया ; और

(ग) इन मिलों द्वारा कितनी-कितनी मात्रा में किस-किस किस्म के सूत का उत्पादन करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया था ?

वस्त्र मंत्रालय के राज्य मंत्री (श्री जी० वेंकट स्वामी) : (क) और (ख) राष्ट्रीय वस्त्र निगम की मिलों ने हथकरघा क्षेत्र की मांग के अनुसार विभिन्न काउन्टों में सादा धागा, बुना हुआ धागा आदि जैसी विभिन्न किस्मों आदि में क्रमशः 1990–91 तथा 1991–92 में 184.21 लाख कि० ग्रा० तथा 110.17 लाख कि० ग्रा० हैंक यार्न का उत्पादन किया ।

(ग) राष्ट्रीय वस्त्र निगम को अपने बाजार यार्न उत्पादन का कम से कम 50 प्रतिशत हैंक के रूप में उत्पादन करना अपेक्षित है ।

बुनकर सहकारी समितियां

3577. श्री राम सिंह राठवा : क्या वस्त्र मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) देश में प्राथमिक बुनकर सहकारी समितियों की गुजरात राज्य के विशेष उल्लेख सहित राज्यवार संख्या कितनी-कितनी है :

(ख) पिछले तीन वर्षों के दौरान सहकारी समितियों द्वारा उत्पादित दस्तकारी की वस्तुओं का वर्षवार ब्यौरा क्या है :

(ग) क्या इन समितियों के पास कोई भंडार जमा हो गया है ;

(घ) यदि हां, तो इस सम्बन्ध में ब्यौरा क्या है ; और

(ङ) सरकार इस सम्बन्ध में क्या कार्रवाई करने का विचार रखती है ?

वस्त्र मंत्रालय के राज्य मंत्री (श्री जी० वेंकट स्वामी) : (क) जानकारी संलग्न विवरण में दी गई है (नीचे देखिए) ।

(ख) से (घ) सरकार प्राथमिक सहकारी समितियों के उत्पादन और स्टाक के आंकड़ों का ब्यौरा नहीं रखती है ।

(ङ) हथकरघा उत्पादों के विपणन में संवर्धन, जिसमें प्राथमिक बुनकर सहकारी समितियों द्वारा उत्पादित उत्पादन भी शामिल है, कई योजनाएं कार्यान्वित की जा रही हैं । इनमें विपणन विकास सहायता, राष्ट्रीय डिजाईन संग्रह के अंतर्गत उत्पादों का उत्पादन व इनकी प्रदर्शनी, महानगरों में राष्ट्रीय स्तर की प्रदर्शनियों का आयोजन शामिल हैं ।